International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2014, Submitted in May 2014, iajesm2014@gmail.com

अमृतलाल नागर की उपन्यासों में कलात्मकता का विकास

सीमा सुरोलिया, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर (राजस्थान)
डॉ वंदना वर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर (राजस्थान)

सार

अमृतलाल नागर हिंदी साहित्य के महान रचनाकारों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनकी साहित्यिक यात्रा प्रतिभा, श्रम, निष्ठा और संघर्ष क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण है। उनके लेखन में जिंदादिली और विनोदी वृत्ति की एक अनूठी विशेषता है, जो उनके गंभीर उपन्यासों में भी विषाद के स्थान पर उल्लास का संचार करती है। नागर जी के चरित्र समाज के विभिन्न वर्गों से लिए गए हैं, और उनके पात्रों का चित्रण न केवल उनके आंतरिक संघर्षों, बल्कि घटनाओं और स्थितियों के साथ उनके व्यवहार को केंद्रित करता है। उनके साहित्य में मनोविश्लेषण की बजाय घटनाओं की मध्यवर्ती भूमिका अधिक प्रमुख है, जिससे उनके पात्र अधिक वास्तविक और जीवंत प्रतीत होते हैं। उनके विशाल साहित्यिक योगदान से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपनी निष्ठा, लगन और श्रमशीलता के बल पर साहित्य के शिखर तक पहुँचने में सफलता पाई।

कहानी और वर्णन कला: अमृतलाल नागर का दृष्टिकोण

अमृतलाल नागर हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यासकार रहे हैं, जिनकी रचनाएँ जीवन के विविध पहलुओं को बहुत ही सुंदर और प्रभावशाली तरीके से चित्रित करती हैं। उन्होंने 1933 से 1986 तक सैकड़ों कहानियाँ लिखी, जिनमें लगभग 75 कहानियाँ "एक दिल हजार अफसाने" नामक संग्रह में संग्रहीत हैं। उनकी कहानियाँ न केवल सामाजिक और मानसिक जटिलताओं को उजागर करती हैं, बल्कि उनकी गहरी मानवता और संवेदनशीलता को भी व्यक्त करती हैं।

कहानी और किस्सागोई की कला:

अमृतलाल नागर की कहानियों में किस्सागोई की विशेष कला देखी जा सकती है, जो उनके लेखन को प्रभावी और रोचक बनाती है। नागर जी का लेखन केवल एक साहित्यिक शैली नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है, जिसमें वे व्यक्ति की कमजोरियों और संघर्षों को अत्यधिक संवेदनशीलता से चित्रित करते हैं। वे अपने लेखन में उन परंपराओं और किंवदंतियों से प्रेरित थे, जो उन्हें उनकी युवा अवस्था में सुनी थीं, जैसे "आलिफ लैला", "तिलिस्म होश रबा" और "फिसानए आज़ाद" जैसी किस्सागोई। इस प्रकार की किस्सागोई ने उनकी लेखनी में एक विशिष्ट रंग पैदा किया, जो उन्हें अन्य समकालीन लेखकों से अलग करता है।

मनुष्य धर्म और सामाजिक संवेदना:

नागर जी की कहानियाँ मानवता और संवेदना के तत्वों से प्रेरित हैं। उनका लेखन मानव धर्म पर आधारित है, जिसमें उन्होंने सामाजिक भेदभाव, दरिद्रता और उत्पीड़न के खिलाफ गहरी सहानुभूति दिखाई है। उनकी कृतियाँ कमजोर वर्ग, पीड़ित और पिछड़े लोगों के प्रति गहरी संवेदनशीलता का परिचय देती हैं। वे मानते थे कि इंसान को उसकी कमजोरियों के साथ प्यार करना चाहिए, क्योंकि कमजोरियाँ न हो तो इंसान नहीं रहता।

उनकी कहानी "वन्दिनी" में कुंती का चित्रण एक ऐसी नारी के रूप में किया गया है, जो अपने पति द्वारा ताले में बंद की जाती है, और इस स्थिति के माध्यम से नागर जी ने नारी जाति

की विवशता को चित्रित किया है। अंत में कुंती का विद्रोही स्वर आज की जागृत नारी का प्रतीक बन जाता है, जो अपने अधिकारों के लिए लड़ने को तैयार होती है।

आधुनिक समाज और नारी का चित्रण:

नागर जी की कहानियाँ आधुनिक समाज की विडंबनाओं और नारी के उत्पीड़न के खिलाफ तीखा प्रहार करती हैं। वे समाज के उस नकली और दिखावटी संस्कृति को पसंद नहीं करते थे, जो केवल बाहरी आडंबर पर आधारित थी। उनकी कहानी "नाश और निर्माण" में मृणालिनी की सोच को उजागर करते हुए यह दिखाया गया है कि "पुँजीवादी संस्कृति" केवल ऊपरी दिखावा और छिछलापन है, जो समाज को कभी भी स्वस्थ नहीं बना सकता। इसके अतिरिक्त, "एटम बम" में विनाश के कारणों और स्वार्थी मानवता पर तीखा प्रहार किया गया है, जो शक्तियों का उपयोग केवल नष्ट करने के लिए करता है।

अमृतलाल नागर जी की रचनाओं का विकास उनकी मानसिकता और समाज में हो रहे परिवर्तनों के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ था। उनके लेखन में जैसे-जैसे समय और समाज में बदलाव आया, उनकी कहानियों की अंतर्वस्तु और शैली में भी स्पष्ट परिवर्तन देखा गया। नागर जी की प्रारंभिक कहानियाँ रोमांटिक और तिलस्मी (फेंटेसी) ढंग की होती थीं, लेकिन उनके सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण में बदलाव के साथ उनकी कहानियाँ अधिक सशक्त और विचारशील बनती गईं।

आरंभिक काल और रोमांटिकता:

अमृतलाल नागर की शुरुआत की कहानियाँ मुख्य रूप से रोमांटिक मूड और तिलस्मी (fanciful) ढ़ंग की होती थीं, जिनमें प्रेम, आदर्श और कल्पनाशक्ति का बड़ा योगदान था। जैसे कि "आलिफ लैला" की कहानियाँ और "तिलिस्म होश रबा", जो काल्पनिक और रोमांटिक दृष्टिकोण से लिखी गई थीं। इन कहानियों में जीवन को एक आदर्श और नितांत सुंदर रूप में प्रस्तुत किया गया था।

राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक बदलाव:

स्वतंत्रता संग्राम के बाद नागर जी का लेखन अधिक सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाता गया। उनके लेखन में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ, और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों को उन्होंने गहरे रूप से महसूस किया। जैसे ही देश में ब्रिटिश साम्राज्य का अंत हुआ और देश में पुँजीवाद का प्रभाव बढ़ने लगा, नागर जी की कहानियों का स्वर भी बदलने लगा।

स्वतंत्रता संग्राम की कहानियाँ:

नागर जी की कुछ प्रारंभिक कहानियाँ राष्ट्रीय आंदोलन से प्रेरित थीं, जैसे "ब्रिटिश राज्य का तिलस्मी दरवाजा" और "हमारे पड़ोसी मुंशी बख्तावर लाल", जिनमें वे ब्रिटिश शासन और उसके दमनकारी तत्वों पर व्यंग्य करते हुए स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष को उजागर करते हैं। इन कहानियों में एक दृढ़ राष्ट्रवादी भावना और साम्राज्यवाद के प्रति नफरत दिखाई देती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, नागर जी ने पुँजीवाद और राजनीति पर तीखा प्रहार किया। उनके द्वारा लिखी गई "किस्सा बी सियासत भढियारिन" और "एडीटर बुल्लेशाह का" जैसी कहानियाँ स्वतंत्रता के बाद की राजनीतिक कुंठाओं और संसारिक स्वार्थों पर चुटीला और सशक्त व्यंग्य

करती हैं। इनमें वे राजनीतिक चालबाजियों, पुँजीवाद की बुराई, और मीडिया की भूमिका पर करारा प्रहार करते हैं।

"सियासत भढियारिन" में भढियारिन का संवाद, जिसमें वह एडीटर बुल्लेशाह से कहती है कि "दौलत का हो गुलाम, दुनिया कर हर बशर", एक यथार्थवादी टिप्पणी है जो सत्ता और पैसे के खेल पर केंद्रित है। यहाँ नारी पात्र की बात करने से, नागर जी ने स्त्री के संघर्ष को भी उद्घाटित किया, साथ ही सामाजिक और राजनीतिक संरचनाओं की पर्तें भी खोल दीं। नागर जी की कला का मूल उद्देश्य हमेशा यह था कि उनका लेखन मानव जीवन के दुख-सुख से जुड़ा हो, और इसमें पात्रों और उनके परिवेश का अन्योन्याश्रित संबंध हो। उन्होंने कहा था कि कला का विकास केवल सौंदर्य की दृष्टि से नहीं, बल्कि वह जब तक मानव जीवन के अनुभवों से जुड़ी न हो, तब तक वह निर्जीव और निष्क्रिय रहती है। उनका मानना था कि कला तब ही सजीव होती है जब उसमें सच्चाई और मानवीय संवेदनाएँ समाहित हों। नागर जी का यह दृष्टिकोण उनके लेखन की नींव बन गया, जिसमें पात्रों और उनके परिवेश का आपसी संबंध महत्वपूर्ण होता था। उनके द्वारा उल्लिखित कथाएँ हमेशा समाज की गहरी परतों को छूने का प्रयास करती थीं।

निबन्ध और वर्णन कला

नागर जी का निबन्ध लेखन वास्तव में एक गहरी मानवीय दृष्टि और व्यापक सांस्कृतिक समझ का प्रतिबिंब है। उन्होंने निबन्ध लिखने के लिए किसी विशिष्ट विधा का पालन नहीं किया, बल्कि अपनी अनुभूतियों, विचारों और आत्मिक अनुभवों को सहज रूप में व्यक्त किया। उनके निबन्धों में विभिन्न साहित्यकारों, समाजिक मुद्दों, सांस्कृतिक संदर्भों और राष्ट्रीय समस्याओं का सम्यक विश्लेषण मिलता है।

नागर जी ने अपने लेखन में समय-समय पर भारतीय समाज की विविधताओं, जातीय एकता, और सांस्कृतिक इतिहास का विवेचन किया। वे हमेशा मानवता के पक्षधर रहे और यह विश्वास करते थे कि कला और साहित्य को मनुष्य की मुक्ति का साधन बनना चाहिए। उनके निबन्धों में हिन्दू और सिख समुदायों की एकता, धर्म और संस्कृति के व्यापक मानवीय दृष्टिकोण, और समाजिक असमानताओं के खिलाफ आवाज़ उठाने का स्पष्ट रूप से चित्रण होता है। नागर जी का लेखन सिर्फ समाज और संस्कृति तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारतीय राजनीति, राष्ट्रीय संकटों और साहित्यकारों के दायित्वों पर भी विचार करता था। उनका उद्देश्य न केवल एक आदर्श समाज की रचना था, बल्कि वे साहित्य के माध्यम से एक स्वस्थ, समृद्ध और सशक्त मानवता की दिशा में भी कार्यरत थे। वे साहित्य को मात्र शब्दों का खेल नहीं मानते थे, बल्कि इसे मानवता की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति मानते थे। नागर जी के निबन्धों में निराशा और कुंठा के बजाय, एक उज्जवल भविष्य के लिए संघर्ष की प्रेरणा मिलती है। उनका दृष्टिकोण यह था कि साहित्य और कला से ही समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव है, और उन्होंने इस दिशा में अपने निबन्धों के माध्यम से न केवल प्रेरणा दी, बल्कि समाज की चेतना को भी जागृत किया।

नाटक और वर्णन कला

नागर जी ने नाटक लेखन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने न केवल रेडियो नाटक लिखे, बल्कि रंगमंच के लिए भी नाटक रचे, जिनमें 'युगावतार' और 'नुक्कड़ पर' प्रमुख

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

हैं। रेडियो नाटक एक विशिष्ट विधा है जिसमें दृश्य के बजाय ध्वनि प्रभाव पर अधिक बल दिया जाता है, और यही कारण है कि इनके शिल्प में मंचीय नाटकों से कुछ भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। नागर जी के रेडियो नाटकों में दो मुख्य तत्व दिखाई देते हैं: पहला, समाज के विभिन्न वर्गों के प्रति चुटीला व्यंग्य और हास्य, और दूसरा, सामाजिक विषमताओं के प्रति गहरा आक्रोश और क्षोभ। रेडियो नाटक में अक्सर व्यंग्य और विनोद का मिश्रण होता है, जो श्रोताओं के मन में सामाजिक संदर्भों को समझने की प्रेरणा देता है। लेकिन साथ ही, क्योंकि रेडियो एक सरकारी संस्था के तहत प्रसारित होता है, इसलिए इसमें किसी भी प्रकार के तीखे या प्रत्यक्ष विरोध को सीमित रूप में व्यक्त किया जा सकता है। फिर भी, नागर जी ने इस सीमा में रहते हुए अपनी रचनाओं में गहरी सामाजिक आलोचना की और यथार्थ को उजागर किया। नागर जी के मंचीय नाटक भी अत्यंत प्रभावशाली थे। 'युगावतार' नाटक का इलाहाबाद में महादेवी वर्मा, पंत, मामा वेरेकर जैसे प्रमुख साहित्यकारों के समक्ष मंचन हुआ था, जो इस नाटक की सफलता का प्रमाण है। इस नाटक में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का गहरा चित्रण किया गया, और इसका मंचन साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत प्रभावशाली था।

यदि नागर जी उपन्यास लेखन में न होते, तो वे निश्चय ही एक सशक्त नाटककार के रूप में पहचाने जाते। उनके नाटकों में फिल्मी अनुभव भी शामिल था, जो उनके लेखन को और भी समृद्ध और विविध बनाता। उनके नाटक न केवल विचारशील थे, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदेश भी प्रदान करते थे, और यह उनकी साहित्यिक प्रतिभा का और एक प्रमाण है।

नागर जी के उपन्यासों में वर्णनकला की विशेषताएँ

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में वर्णन कला का प्रभाव बहुत गहरा और विशिष्ट है। उनका लेखन समाज और संस्कृति के गहरे पहलुओं को उजागर करता है, और उनकी वर्णन कला न केवल कथा के विस्तार को बढ़ाती है, बल्कि पात्रों की मानसिकता, सामाजिक परिवेश और ऐतिहासिक संदर्भ को भी जीवंत रूप से प्रस्तुत करती है। नागर जी के उपन्यासों में आदर्शवाद, यथार्थवाद, सांस्कृतिक तत्व, मनोविश्लेषण और आंचलिकता का समावेश मिलता है। उनके लेखन में व्यक्ति और समाज की चेतना के बीच का संतुलन साफ दिखाई देता है। उनके उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ, मानवता, नारी जीवन, और आंचलिकता के विविध पहलुओं पर भी गहरी दृष्टि मिलती है। महाकाल, सेठ बॉकेमल, समुद्र शतरंज के मोहरे जैसे उपन्यासों में यह सामाजिक और मानसिक परतें उभर कर सामने आती हैं।

नागर जी के उपन्यासों की एक विशेषता यह भी है कि वे महाकाव्यात्मक रूप में रचे गए हैं। भैरव प्रसाद गुप्त की तुलना में उनके उपन्यास अधिक सशक्त और गहरे प्रभाव वाले हैं। उनका काव्यात्मक दृष्टिकोण उनके पात्रों के माध्यम से समाज और जीवन की गहरी प्रवृत्तियों को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, सत्ती मैया का चौरा और भाग्य देवता जैसे उपन्यास महाकाव्यात्मक चेतना से संपन्न हैं, जो समाज और मनुष्य के आदर्श और संघर्ष को चित्रित करते हैं। वर्णन में कला के आयाम की खोज करने में नागर जी सफल रहे हैं। उनके उपन्यासों की भाषा की सहज सम्प्रेषण क्षमता और भाव योजना का संयोजन उनके लेखन में विशेष महत्व रखता है। नागर जी के पात्र, जैसे नारी पात्र, अपने जीवन के हर पहलू में सजीव और यथार्थ लगते हैं।

उनकी पात्र योजना और पात्र परिचय का नाटकीय प्रयोग, उपन्यास की कथा को एक नया आयाम देता है।

उदाहरण स्वरूप, नाच्यौ बहुत गोल में नागर जी ने निगुर्ण मोहन नामक पात्र का परिचय एक अनूठे शिल्प के माध्यम से दिया है। यह पात्र न केवल अपनी सामाजिक स्थिति को व्यक्त करता है, बल्कि उसके द्वारा दिए गए कथन और उसके व्यवहार से समाज की वास्तविकताओं का भी चित्रण होता है। इसी तरह, बूँद और समुद्र के रामजी बाबा पात्र के माध्यम से नागर जी ने ग्रामीण समाज और आधुनिक युगबोध को सहजता से जोड़ा है। उनका यह पात्र ठेठ देहाती भाषा में आधुनिक जीवन के वास्तविक रूप को प्रकट करता है। नागर जी की वर्णन कला में सामाजिक वातावरण और भावनाओं का गहरा समावेश होता है। जैसे शतरंज के मोहरे में उन्होंने शाही जीवन और ठगी की संस्कृति को चित्रित करते हुए अपने वर्णन में तीव्रता और उत्साह का मिश्रण किया है। इस प्रकार, उनका लेखन न केवल कथा तक सीमित रहता है, बल्कि उसमें एक गहरी सामाजिक और मानसिक प्रक्रिया का भी प्रतिबिंब मिलता है।

नागर जी के कथा साहित्य में वर्णनात्मक कला का स्थान

अमृतलाल नागर के कथ साहित्य में वर्णनात्मक कला का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, जो उनके उपन्यासों की संरचना और प्रभाव को गहरे स्तर पर प्रभावित करता है। उनके उपन्यासों में समाज के शहरी मध्यवर्गीय जीवन की सजीव और विश्वसनीय छवि उभर कर सामने आती है। नागर जी की रचनाएँ प्रेमचन्द की परंपरा में खड़ी होती हैं, लेकिन उनका ध्यान विशिष्ट रूप से शहरी और मध्यवर्गीय समस्याओं पर केंद्रित रहा। उनके उपन्यास, जैसे महाकाल, मानस का हंस, बूँद और समुद्र आदि, समाज की जटिलताओं, सामाजिक रिश्तों, और मानवीय भावनाओं को गहरे तरीके से व्यक्त करते हैं। नागर जी का साहित्य आधुनिक युगबोध, समकालीन जन चेतना, और सांस्कृतिक संघर्ष की गहरी समझ से निकला है। उनका उपन्यासकार सत्य को केवल दिखाने का नहीं, बल्कि उसे गहरे बोध के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। साहित्य का उद्देश्य उनके अनुसार न केवल समाज की वास्तविकताओं को प्रस्तुत करना है, बल्कि इन वास्तविकताओं में नैतिकता, धर्म, और मानवता के तत्वों को जोड़कर एक समाज सुधार का संदेश देना है।

नागर जी के उपन्यासों में पात्रों की योजना एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनके पात्र केवल कथा के हिस्से नहीं होते, बल्कि वे समाज की वास्तविकताओं और मानवीय संवेदनाओं को प्रतिविंबित करते हैं। जैसे मानस का हंस में तुलसीदास का पात्र परंपराओं के प्रति निष्ठावान होते हुए भी आधुनिक युग के बोध और संघर्षों के वाहक बनकर उभरता है। ऐसे पात्रों के माध्यम से नागर जी ने जीवन के गहरे अर्थों को उजागर किया है। नागर जी के उपन्यासों में संवाद योजना का भी विशिष्ट स्थान है। उनके संवाद न केवल पात्रों के मानसिक संघर्षों को व्यक्त करते हैं, बल्कि वे समाज के विभिन्न वर्गों की चेतना और मानसिकता को भी प्रकट करते हैं। संवादों के माध्यम से पात्रों की साधारण-असाधारण मानसिकता, व्यक्तिगत कुंठाएँ, आवेदना, और संघर्ष स्पष्ट रूप से सामने आते हैं। इस नाटकीय संवादों का प्रयोग नागर जी के वर्णनात्मक शिल्प को और भी प्रभावी बनाता है।

नागर जी के उपन्यासों में वातावरण और परिवेश का चित्रण बहुत सशक्त है। उनका ध्यान केवल कहानी पर नहीं होता, बल्कि वे सामाजिक संदर्भ और मानवीय भावनाओं के बीच एक

समन्वय स्थापित करते हैं। उनके उपन्यासों में समाज के विभिन्न वर्गों, विभिन्न स्थानों और विभिन्न कालखंडों के बीच एक बारीक अंतर-सम्बंध और संघर्ष दिखाया गया है।

निष्कर्ष

अमृतलाल नागर ने हिन्दी गद्य को अपनी विविध रचनाओं से समृद्ध किया है। उनके साहित्य में गद्य की विभिन्न विधाओं का सम्मिलन दिखाई देता है, जिनमें इतिहास लेखन, व्यंग्य, किस्सागोई, विचारधारा और कथा शिल्प का अद्वितीय संयोजन है। उनकी गद्यशैली में न केवल एक विचारक और अध्येता की गम्भीरता है, बल्कि एक कथा शिल्पी की कला और एक नाटककार की निपुणता भी झलकती है। नागर जी के पत्रों का संग्रह जो अभी प्रकाशित नहीं हुआ है, उसमें उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के नए पहलू सामने आ सकते हैं। उनके गद्य में व्यंग्यकार की चुटकी, किस्सागो की स्मृति संदर्भ, और लखनवी तहजीब का प्रभाव एक अद्भुत मेल प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि उनका साहित्य समग्र रूप से साहित्यिक गहनों की तरह है, जिसे केवल पूरा साहित्य पढ़ने के बाद ही ठीक से समझा और सराहा जा सकता है। नागर जी का साहित्य केवल साहित्यिक मूल्य ही नहीं रखता, बल्कि यह सामाजिक चेतना, मानवता और संस्कृति के प्रति गहरी प्रतिबद्धता का भी परिचायक है। उनके कथात्मक शिल्प, वर्णनात्मक कला और संवादों के माध्यम से वे मानव जीवन के जटिल पहलुओं को अत्यंत संवेदनशीलता और रचनात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अमृतलाल नागर का लेखिका के नाम, पत्र दिनांक 22.5.1973
2. देवेंद्र चौबे - कथाकार अमृतलाल नागर, पृ. 26
3. शशिगुप्ता - प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास नए नैतिक मूल्य, पृष्ठ 220
4. डॉ. सत्यपाल चुघ - आस्था के प्रहरी, पृ. 18
5. श्रीलाल शुक्ल - अमृतलाल नागर: भारतीय साहित्य के निर्माता, पृ. 235
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 445
7. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी - हिंदी साहित्य, पृ. 410
8. डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी - हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 132
9. रामस्वरूप चतुर्वेदी - समसामयिक हिंदी साहित्य, पृ. 265
10. अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर, पृ 50
11. डॉ. पुष्पा बंसल - अमृतलाल नागर भारतीय उपन्यास, पृ. 318
12. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 338-39

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY